Date – 28/08/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Difference between Nyaya and Buddhist logic.

Scanned with CamScanner

इस प्रकार "यह (सीताम) है" अज्ञात साध्य का ज्ञान त्रिरूपहेतुयुक्त अन्वय - व्यतिरेक उदाहरणों के प्रत्यक्ष ज्ञान के आधार पर होता है। यही अनुमान है। मनोरथनंदी ने भी अनुमिति और अनुमान को एक मान लिया है। लेकिन उन्होंने अनुमान की अपनी दी गई परिभाषा में एक महत्वपूर्ण बात अवश्य जोड़ी है, और वह है - "अनुमान द्वारा परोक्ष अर्थ की एकांतिक रूप से सिद्धि की जाती है।"

परोक्ष अर्थ अर्थात् अज्ञात या अप्रत्यक्ष साध्य, एकांतिक रूप अर्थात् अपवादरहित होकर, सिद्धि अर्थात् ज्ञान। अनुमान वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अज्ञात साध्य का ज्ञान निरुपाधिक (अपवादरहित) होता है। स्पष्ट है कि इस वाक्य द्वारा मनोरथनंदी ने अनुमान और अनुमिति के अंतर को स्पष्ट किया है। अज्ञात साध्य का ज्ञान अनुमिति है, और अनुमिति का साधन अनुमान है। दिङ्नाग और धर्मकीर्ति की परिभाषाओं में निहित इस दोष (प्रमा - प्रमाण - अभिन्नता) को मनोरथनंदी ने दूर किया है। मनोरथनंदी द्वारा दी गई परिभाषा की एक विशेषता यह भी है कि अज्ञात साध्य का ज्ञान निरुपाधिक होता है। यदि यह ज्ञान सोपाधिक (अपवाद सहित) हो, तो अनुमान दोषपूर्ण हो जाता है। वस्तुतः वह अनुमान ही नहीं रहता। अपवाद रहितता या निरुपाधिकता अनुमान की विशेषता है।

इसका स्पष्ट उल्लेख दिङ्नाग और धर्मकीर्ति ने नहीं किया है।

न्याय तर्कशास्त्र और बौद्ध तर्कशास्त्र में दी गई अनुमान की परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि जहां न्याय तर्कशास्त्र में अनुमान और अनुमिति में स्पष्ट रूप में अंतर किया गया है, वहां बौद्ध तर्कशास्त्र में इन दोनों पदों को एक मान लिया गया है, या इनके अंतर को स्पष्ट रूप में नहीं दिखलाया गया है। अनुमान प्रमा (यथार्थ ज्ञान) का साधन अर्थात् प्रमाण है, ज्ञान नहीं, जबकि अनुमिति प्रमा अर्थात् ज्ञान है। दूसरी बात है कि दोनों तर्कशास्त्रों में व्याप्ति-संबंध को अनुमान की परिभाषा के लिए अनिवार्य तत्व माना गया है। परंतु बौद्ध तर्कशास्त्र में पक्षधर्मता का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, यद्यपि न्याय तर्कशास्त्र की भांति उसने भी हेतु के पक्षधर्मता का स्पष्ट उल्लेख नहीं है, यद्यपि न्याय तर्कशास्त्र की भांति उसने भी हेतु के पक्षधर्मत्व को स्वीकार किया है। अतः अनुमान के आधार तत्व के रूप में पक्षधर्मता को भी स्वीकार किया गया है। तात्पर्य यह है कि न्याय तर्कशास्त्र और बौद्ध-तर्कशास्त्र द्वारा दी गई परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुमान के आवश्यक तत्व और अंग क्रमशः "व्याप्ति एवं पक्षधर्मता" और "साध्य-हेतु-पक्ष" हैं।

बौद्ध तर्कशास्त्र में दी गई अनुमान की परिभाषा अपेक्षाकृत संकुचित है, क्योंकि प्रमा-प्रमाण-अभिन्नता और पक्षधर्मता एवं निरूपाधिकता का अभाव (स्पष्ट उल्लेख नहीं होना) पाया जाता है। न्याय तर्कशास्त्र द्वारा दी गई परिभाषा में यह अभाव नहीं है।

Scanned with CamScanner